दो शब्द

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक 'सरस भारती' भाग–5 में संग्रहीत साहित्यिक सामग्री को राष्ट्रीय पाठ्य–पद्धति 2005 के अनुसार विकसित किया गया है। प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक की रुप रेखा बच्चों को स्कूली जीवन के अतिरिक्त सामाजिक जीवन से भी जोड़ने पर बल देती है ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का सामूहिक विकास हो सके। प्रस्तुत साम्रगी के द्वारा बच्चों के अन्दर परम्परा से चले आ रहे घर तथा स्कूल, समाज तथा स्कूल अथवा व्यावहार एवम् पुस्तकीय ज्ञान के मध्य बने हुए अन्तराल को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। नवीन पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकों में इस मौलिक विचार को क्रियान्वित रूप से लाने का प्रयास है। इस प्रयास में प्रत्येक विषय को एक निश्चित तथा सीमित परिधि में देने का विरोध सम्मिलित है तथा किसी भी विषय विशेष को रटा देने की अपेक्षा बोध गम्यता पर अधिक बल दिया गया है। अब इस प्रयास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि स्कूलों के शिक्षक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों तथा प्रश्नों की सहायता से सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते है। प्रस्तुत सामग्री के द्वारा बच्चों के अन्दर चिंतन शीलता तथा सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया में पूर्णतया स्वतंत्रता दी जाए तथा उन्हें निश्चित एवम् निर्धारित पारम्परिक गतिविधियों से स्वतंत्र कर दें ।

मूल्यांकन द्वारा यह तथ्य पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा कि प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक स्कूल में छात्रों के शैक्षिक जीवन को मानसिक दबाव तथा तनाव के स्थान पर शैथिल्य का साम्राज्य लाने में कितनी प्रभावी एवम् सहायक सिद्ध हो सकती है। बोझ की समस्या से

निपटने के लिये पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में साम्रगी का निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवम् अध्ययापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। जे० एण्ड के० स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन प्रस्तुत पुस्तक की रचना के लिये आमंत्रित किए गए प्रयोगशाला के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

डॉ. शेख बशीर अहमद
चेयर मैन,
जम्मू व कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल
ऐजूकेशन (जम्मू)

आभार

राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर नई शिक्षा पद्धति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिस प्रकार की शिक्षण–सामग्री की आवश्यकता को महसूस किया गया था ठीक उसी प्रकार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जम्मू–कश्मीर के स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन ने राज्य के शिक्षकों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों तथा विद्वज्जनों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित करके अभीष्ट सामग्री को प्रस्तुत पुस्तक 'सरस भारती' भाग–5 में संग्रहीत किया है।

पुनः शोधित तथा नई शिक्षा नीति पर आधारित प्रस्तुत पुस्तक प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने के लिये विकसित 'सरस भारती' भाग – 5 सरस भारती पुस्तक माला की पाँचवी कढ़ी है। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पुस्तक में संग्रहीत सामग्री के माध्यम से अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त कराना तथा पठित सामग्री के माध्यम से स्वतंत्र रूप से चिंतन करने के लिये प्रोत्साहित करते हुए उन्हें स्वाश्रित बनाना। पुस्तक में प्रयास किया गया है कि बच्चों को कम से कम समय में अधिक से अधिक पठन योग्यताओं का विकास हो सके। प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य की विभिन्न विधाओं – कविता, कहानी, निबंध आदि के द्वारा पठन सामग्री में विविधता लाने का प्रयास किया गया है जिससे बच्चों में पुस्तक के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके तथा उन्हें पढ़ने में किसी प्रकार का प्रयास जनक कार्य महसूस न हो, अर्थात् पुस्तक में संग्रहीत सामग्री को स्वाभाविक बनाने के लिये पाठ्य–सामग्री में भाषा के साथ–साथ भावों तथा विचारों को भी संयोजित किया गया है। पुस्तक में ऐसा प्रयास किया गया है कि जिससे बच्चों में स्वतः अध्ययन की रूचि बढ़े और उनमें वांछनीय जीवन–मूल्यों का विकास हो सके। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की आधार भूत सभी कुशलताओंः– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना तथा चिंतन के विकास के साथ–साथ अध्ययन की कुशलताओं को भी महत्त्व दिया गया है। पुस्तक में ऐसा प्रयास किया गया है कि जिससे बच्चों का सामूहिक विकास हो सके।

प्रत्येक पाठ के अन्त में विस्तृत प्रश्न अभ्यास तथा इनके द्वारा भाषा के शुद्ध प्रयोग व्याकरण

के ज्ञान एवम् अतिरिक्त पठन सामग्री के विषय में संकेत दिए गए हैं। जो शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिये उपयोगी हैं। प्रत्येक पाठ के अन्त में कठिन शब्दों के अर्थ भी सहायतार्थ दिये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सरस भारती भाग – 5 को निर्मित एवम् विकसित करने के लिये कार्यशाला के इन विशेषज्ञों का नाम उल्लेखनीय है :

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंड्ररी स्कूल, सुरीनसर ।
2. डॉ. बंसी लाल शर्मा : प्राध्यापक डायरैक्टर स्कूल ऑफ ऐजूकेशन।
3. श्रीमती कांता शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंड्ररी स्कूल मुबारक मंड़ी, जम्मू।
4. श्री श्याम लाल शर्मा : प्राध्यापक हिन्दी।
5. श्रीमती शक्ति शर्मा : आध्यापक गवर्नमैंट मिडिल स्कूल रिहाड़ी, जम्मू।

विषय के मर्मज्ञ उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी.डी.आर.विंग. के जिन अधिकारियों का अतिरिक्त सहयोग रहा वे इस प्रकार हैं –

1. सुषमा वर्मा : डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक।
2. **डॉ. यासिर हामिद सिरवाल : भौक्षिक पदाधिकारी ।**

प्रस्तुत पुस्तक की निर्माण एवम् विकास प्रक्रिया के अतिरिक्त पाठ्य सामग्रों को कम्प्यूटर द्वारा लिपिबद्ध करके पुस्तकीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए श्री मुकेश रकवाल , कु० गोमती शर्मा को और पब्लिकैशन विंग के प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने अनथक परिश्रम द्वारा प्रस्तुत निर्माताओं विशेषज्ञों तथा सी०डी०आर०विंग० के अधिकारियों के इस प्रयास को सफल एवम् सार्थक बनाया।

डॉ० एम० एस० बलोरिया
सैक्ट्री
जम्मू व कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

पाठ–सूची

1.	राख की रस्सी (लोककथा)	1–7
	दुनिया की छत	8–9
2.	पुष्प की अभिलाषा (कविता)	10–13
3.	फसलों के त्योहार (लेख)	14–22
4.	खिलौने वाला (कविता)	23–26
5.	ईदगाह (कहानी)	27–37
6.	शुद्ध हवा (निबन्ध)	38–47
7.	नन्हा फनकार (कहानी)	48–59
8.	वन के पंछी (कविता)	60–64
9.	एक दिन की बादशाहत (कहानी)	65–73
10.	एक माँ की बेबसी (कविता)	74–79
11.	चावल की रोटियाँ (नाटक)	80–93
12.	काबुली वाला (कहानी)	94–103
13.	पानी रे पानी (लेख)	104–109
14.	चुनौती हिमालय की (यात्रा वर्णन)	110–118
15.	वर्षा ऋतु (कविता)	119–122
16.	जहाँ चाह वहाँ राह (लेख)	123–129
17.	लोहड़ी (निबन्ध)	130–138
18.	गुरू और चेला (कविता)	139–147
19.	लोसर : लद्दाख का नव वर्ष (निवन्ध)	148–155